अध्याय : 1

कमलेश्वर जीवनी व्यक्तित्व और कृतित्व

अध्याय : 1

कमलेश्वर जीवनी व्यक्तित्व और कृतित्व

1·1 प्रास्ताविक

आज़ादी के बाद के प्रमुख साहित्यकारों में कमलेश्वरजी का नाम खास तौर से लिया जाता है। कमलेश्वर वह शख्स हैं जिन्हें आज हर हिन्दी प्रेमी जानता है। हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में उनका स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। असाधारण रूप से साधारण व्यक्ति कमलेश्वरजी हैं। सारिका के जरिये हिन्दी कहानी को [redacted] नया मोड़ देने का काम उनकी रचनाओं ने किया है। कहानी विधा में उन्होंने अपना नाम रोशन कर दिया है। उपन्यास के क्षेत्र में भी वे कम महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। कमलेश्वर हिन्दी के सतर्क कहानीकार हैं। श्रेष्ठ आलोचक, संपादक, कहानीकार, उपन्यासकार, साहित्यकार, फिल्मकार के रूप में हमारे सामने आते हैं। इसके साथ साथ वह एक अच्छे लेखक, नेता, वक्ता और आदमी भी हैं।

1·2 कमलेश्वर का जीवन परिचय

कमलेश्वर का पूरा नाम है - कमलेश्वर प्रसाद सक्सेना। कभी कभी वे अन्य उपनामों से भी लिखा करते हैं। कभी विप्र गोस्वामी नाम से तो कभी हरिश्चन्द्र। कभी सौमित्र सिनहा तो कभी पर्यवेक्षक। आखिर हिन्दी संसार उन्हें "कमलेश्वर" के नाम से ही जानता है। उनका जन्म 6 जनवरी 1932 को कटरा, मैनपुरी (उत्तर प्रदेश) में हुआ। दरअसल उनकी रचनाओं का प्रमुख केन्द्र मैनपुरी ही रहा है।

1·3 कमलेश्वर का बचपन

कमलेश्वर का बचपन निम्न मध्यवर्गीय समाज और उनके चरित्रों की जीती जागती तस्वीर है। उनका जीवन दुःख से बड़े यथार्थ है। उनका जीवन

यथार्थ के साथ साथ मार्मिक ढंग से व्यक्त हुआ है। संपूर्ण दलित वर्ग के प्रति उनकी सहानुभूति, उनकी कलात्मकता, उनकी संवेदना अत्यन्त विस्तृत है। उनका केनवस बहुत बड़ा है। उनकी विजयी मुसकान, उनका खुला हुआ मैत्री भाव, उनका जबरदस्त आत्मविश्वास तथा उनका ज्ञान भंडार यह उनकी विशेषता है। कमलेश्वर असाधारण रूप से साधारण व्यक्ति हैं। वे छोटे और आम आदमियों के रचनाकार हैं। उन्होंने बचपन में संत्रास का, एकाकीपन का, कुण्ठा का सामना किया है।

1·4 कमलेश्वर की शिक्षा

उनकी प्रारंभिक शिक्षा मैनपुरी हाइस्कूल तथा गवर्नमेंट हाइस्कूल मैनपुरी में संपन्न हुई। उन्होंने सन 1950 में के||पी·अिटंर कालिज अिलाहाबाद में अिंटरमिडीयट की परीक्षा पास की। जिसके बाद उन्होंने सन 1954 में अिलाहाबाद विश्वविद्यालय से अेम·अे· की परीक्षा पास की। उनकी हिन्दी के अिलावा भौतिक, रसायनशास्त्र, गणित, अर्थशास्त्र और भूगोल आदि कई विषयों में दिलचस्पी का परिचय भी मिलता है।

1·5 कमलेश्वर की नौकरियाँ

कमलेश्वर ने संघर्ष करते करते साहित्य का सर्जन काम जारी रखा। उन्होंने छोटी मोटी कई प्रकार की नौकरियाँ की। शुरू में उन्होंने प्रकाश प्रेस मैनपुरी में प्रूफरीडिंग के साथ साथ स्थानिय पत्र-पत्रिकाओं में लेखन का काम भी जारी रखा। उन्होंने पचास रूपये माहवार पर "बहार" मासिक (इलाहाबाद) पत्रिका के संपादन का काम भी किया। अनियमित वेतन पर सायिनबोर्ड पेंटिंग का भी काम किया। छोटे मोटे काम करने में वे कभी हिचकिचाए नहीं। उन्होंने कहानी, मासिक के संपादन के साथ नयी कहानियाँ "अिंगित" साप्ताहिक तथा "सारिका" के सम्पादन का भी काम किया। रेडिओ स्क्रिप्ट रायटिंग के साथ साथ टेलिविजन में भी स्क्रिप्ट रायटिंग का काम भी किया। उन्होंने चाय के गोदाम में अपना नाम बदलकर चोकीदारी की नौकरी भी की।

1·6 **कमलेश्वर और उनका परिवार**

मैनपुरी में उनका परिवार था माँ और उनकी पत्नी गायत्री। अपनी पहली बच्ची को न देख पाने की विवशता में वे कहते हैं मेरे जीवन में भयानक संकट और गरीबी के दिन थे। छोटा भाई वरीन है। कमलेश्वर बारह साल के थे तभी उसके बड़े भाई सिध्दार्थ की मृत्यु हुई थी। उनके पिता और दादा की मौत उनकी माँ उस टूटते परिवार का सम्मान बचाने के लिए सौतेले बेटे पर काफी खर्च कर रही थी। और अपने सगे बेटे कैलाश {कमलेश्वर} के बारे में मजबूरन कंजूसी थी। कमलेश्वर हर टर्म में फर्स्ट आते थे। इसलिए उन्हें शिष्यवृत्ति मिलती थी। वह बड़े यथार्थ से जीवन को निभाते थे। यह उनका बढ़पन है।

1·7 **कमलेश्वर का व्यक्तित्व**

कमलेश्वर का व्यक्तित्व बहुत बड़ा गतिशील है क्योंकि उनकी कथनी और करनी में एकात्मकता का दर्शन है। उन्होंने सच्चाई को रेखांकित किया है। कमलेश्वर वक्त के सही है। राजनीतिक परिस्थिति व्यक्ति के दायित्व की क्षमता की तरह संपन्न कमलेश्वर है। जो हमेशा सही होता है उसका नाम इज्जत से लिया जाता है। प्रवाह, संवेदना, भाषा की दृष्टि से कहानी में परिवर्तन आया है। तूफानी गति से व्यक्ति कहानी में प्रकट होता है। उदा· "खोयी हुई दिशाओं" की तलाश थी, उसने अपनी इस तलाश से "आधुनिक" को भी अतीत बना दिया। आदमी की जड़े बहुत गहरी थी, नैतिकता का जहर नहीं था। सौन्दर्यवादिता में विश्वास था। उसकी कला को क्षति पहुँचना ही नामुमकिन था।

कमलेश्वर हिन्दी के कहानीकार हैं। बम्बई ने उसको "भारतीय कलाकार" बना दिया। उन्होंने जिस चीज को छुआ वह संपूर्ण पेशेवरी से हुआ। टेलिविजन कार्यक्रम हो या कोई फिल्म पटकथा या फिर "सारिका" का संपादन हो। "सारिका" को उसने भारतीय पत्रिका बनाने का सफल कार्य किया है। उन्होंने राष्ट्रीय श्रेष्ठता की सार्थक रचनाएँ की। उसकी पारदर्शिता चौंधियानेवाली थी। श्रेष्ठता की सार्थक रचनाएँ उपन्यास, कहानियाँ हैं। कहानी ने उसकी बौध्दिकता को बढ़ाने का सफल

कार्य किया था। कहानी पाठक को औत्सुक्य बढ़ाने का कार्य करती है। कहानी की रोचकता, कोतुहल पाठक को जागृत करने का प्रयास करती है।

कमलेश्वर यथार्थवादी व्यक्तित्व के रूप में हमारे सामने आते हैं। यथार्थवाद का खुरदरापन उनमें नहीं हैं। व्यक्तिवाद का आधिक्य पूँजीवादी समाज व्यवस्था की देन है। कमलेश्वर के गद्य साहित्य का समाजीकरण हो चुका है। उनके विकास का क्रम हमेशा ही मोहक रहा है। उनकी कार्यक्षमत्ता की दृष्टि स्पष्टता पर जागृत रही है। कमलेश्वर एक ऐसे व्यक्ति हैं जिनमें आस्था और अनास्था का अजीब मिश्रण देखने को मिलता है। उसकी कर्म नैतिकता रफतार मारक है। कमलेश्वर एक जिद्दी आदमी हैं। वे सचमुच सिर्फ हिन्दी के ही साहित्यकार नहीं, बल्कि विश्व के साहित्यकार हैं। वे साहित्य में तत्पर हैं। उनका व्यक्तित्व सर्वश्रेष्ठ है। वे बेहद मेहनती आदमी हैं। कमलेश्वरजी एक साथ कहानीकार, नाटककार, आलोचक हैं।

1·8 कहानीकार कमलेश्वर

कमलेश्वर की चारित्रिक गहनता, अनुभूति, क्षमता, ज्ञान का सफल ढंग पाठकों के सक्षम रखने में तत्पर है। "कस्बे का आदमी" से लेकर "इतने अच्छे दिन" तक की उनकी कथा की स्पष्टता है। उनकी रचना युग की परिचायक है। यथार्थ को वे रोमेंटिकता और तर्क के सामंजस्य प्रस्तुत करने में कामयाब हुए हैं।

"राजा निरबंसिया" में अच्छी तरह अंकित है। यह घर एक पागलखाना क्यों है ? लोग कदर की आहत का अनुभव क्यों कर रहे हैं, हँसी क्यों नही आती इस तरह के सवाल इस कहानी में हैं। एहसास की कमी के वजह त्रासद का जन्म हुआ है। यथार्थ शब्द का अर्थ है जो कटु है, वही यथार्थ है। यथार्थ में समन्वय का स्थान नहीं है। विषाद को यथार्थ का नाम नहीं दिया जाता। यह कहानी अयथार्थ की कहानी है। गरीबी आदमी को किस हद तक तोड़ देती है। गरीबी से लोग अपनी बीवी को बेच रहे हैं। घर की बहू-बेटियों की इज्जत अपना दुश्मन बना बैठी। गरीबी आदमी के लिए अतीत का अर्थ बदल देती है। एक युग की विषमता दूसरे युग से एकदम भिन्न है। निर्णायक नियति किसकी है ? अतीत

के राजा की है, आधुनिक युग में निम्नवर्गीय आदमी की विषमता वही है। कमलेश्वर की कहानियाँ अतियथार्थवाद का परिचय है।

कमलेश्वर की कहानियाँ गरीब आदमी के बारे में विचार करने वाली कहानियाँ हैं। वे यथार्थ के साथ साथ व्यंग्य का उपयोग करते हैं। उनकी अन्य सशक्त कहानियाँ हैं - "देवा की माँ", "सुबह का सपना", "मुरदों की दुनिया", "पानी की तस्वीर", देवा की माँ की पीड़ा और द्वंद्व का अंकन है। "सुबह का सपना" एक विराट मानवीय फलक पर फैल जानेवाली कहानी है। "पानी की तस्वीर" में प्रेम के द्वंद्व के बीच एक आदर्श की ओर संकेत है। "मुरदों की दुनिया" के नये माहौल में आदमी की करूणा और घृणा को रूपायित करनेवाली एक सशक्त कहानी है।

"खोयी हुई दिशाएँ" से कमलेश्वर की एक नयी यात्रा शुरू होती है। इसमें महानगरों के परिवेश की क्रूर, स्वार्थी, अजनबीपन चेतना की अभिव्यक्ति है। कस्बे से आया हुआ चन्दर महानगर में आकर अपने को निपट अकेला और अजनबी अनुभव करता है। पड़ोसी अजनबी है, समाज अजनबी है, शासन अजनबी है किन्तु विडम्बना वह है कि चन्दर अकेलेपन ढंग से दखल देते है। तनहाई को रूपायित करता हुआ कहानीकार कहता है - "...कनाटप्लेस में खुले हुए बान हैं। तनहा पेड़ है और उन दूर-दूर खड़े तनहा पेड़ों के नीचे नगर निगम की बेंचें हैं जिन पर थके हुए लोग बैठे हैं और लान में एकाध बच्चे दौड़ रहे हैं। बच्चों की शक्लें और शरारतें तो बहुत पहचानी-सी लगती हैं पर गोल गप्पे खाती हुई उनकी मम्मी अजनबी लगती है क्योंकि उनकी आँखों में मासूमियत और गरिमा से भरा प्यार नहीं है। उनके शरीर में मातृत्व का सौन्दर्य और दर्प भी नहीं है, उसमें सिर्फ एक खुमार है और एक बहुत बेमानी और पिटी हुई ललकार है जिसे न तो नकारा जा सकता है और न स्वीकार किया जा सकता है - वह ललकार सब कानों में गूँजती है और सब बहरों की तरह गुजर जाते हैं।"[1]

मातृत्व के व्यक्तित्व से अजनबी बनी माताएँ उनकी ललकार का चित्र महानगर का चित्र है। चन्दर की बेकारी अजनबीपन की भयावहता उभारती हैं।

"बयान" एक बहुत सशक्त कहानी है क्योंकि वह न्यायतंत्र के खोखलेपन को उद्घाटित करती है। कमलेश्वर की कहानियाँ ठोस यथार्थ पर घटित होती है। परिवेश के जीवन्त चित्र का अंकन करना उनकी कहानी की विशेषता है। "अकाल" कहानी एक सामान्य कहानी है। "फटे पाल की नाव" भी एक सामान्य कहानी है। कमलेश्वर की कहानियाँ परिवेश के बीच जीती हुई शक्ति है। कमलेश्वर की कहानियाँ अधिक वैविध्यपूर्ण विशिष्ट है। उनकी कहानियाँ कथ्य और शिल्प की दृष्टि से सदा अलग अलग है। उनका स्वर सबसे अलग है।

कमलेश्वर एक सतर्क कहानीकार हैं। अपने आसपास फैली दुनिया को उन्होंने खुली नज़र से देखने की कोशिश की है। आज का यथार्थ क्षयग्रस्त हो गया है। "लाश, लड़ाई, बयान ये कहानियाँ हैं" इनके अतिरिक्त "स्मारक", "ब्रांचलाइन का सफर", "अपने देश के लोग" यथार्थ को व्यंग्य का निशाना बनाया गया है। इन कहानियों के माध्यम से हमारा राष्ट्रीय चरित्र अपनी संपूर्णता उभर आता है। प्रजातंत्र का हर मंच गलत बोलने लगा है शब्द फरेब का फन्दा है।

समाज नारी के प्रति सदा क्रूर और आक्रमक रहा है। उसे बराबर जिसकी तरह इस्तेमाल किया गया है। कमलेश्वर ने बड़ी बेबाकी से समाज के सत्य को उद्घाटित किया। पहली धारा के सर्वाधिक सशक्त कहानीकार कमलेश्वर हैं। वे अपनी कहानियों में सामाजिकता के प्रति जागरूक रहें हैं। उनकी दृष्टि शुरू से ही साफ और ईमानदार रही है। "नीली झील" अन्तिम कहानी है। इन्द्रनाथ मदान लिखते है "नीली झील" महेसा में एक चाह है। "नीली झील" कई स्तरों पर प्रतीक है। और कस्बे का प्रतीक है। नीली झील उन मानवीय संघर्षों का प्रतीक है, जिसे लेखक धर्म की रूढ़ियों को जीवित रखना चाहता है।

"नीली झील" महेश पांडे नामक एक अशिक्षित सामान्य आदमी की यह कहानी है। वे नोकरी छोड़कर शहर से थोडी दूर नीली झील की रास्ते पर मजदूरी कर रहा है। महेश पांडे सौन्दर्य के प्रति अनाम सी भूख से जी रहे हैं। नीला रंग उनका सबसे प्रिय रंग रहा है। इसी कारण वह नीली झील से प्यार

करता है। स्पष्ट है महेश स्वाभिमानी है। किसी की दया पर वह जीना नहीं चाहता। अपनी भीतरी अनाम, आकर्षण की पूर्ति के लिए स्वेच्छा है। उसका मूल्यांकन पैसों में संभव ही नहीं था। महेसा अत्यधिक सरल और संवेदनशील युवक है। उसे पक्षियों से नीली झील से अत्यधिक प्यार है। महेश पांडे के चरित्र का पूर्वार्ध अधिक यथार्थ है।

डॉ॰इन्द्रनाथ मदान ने लिखा है - "कविता के धागों में कहानी बुनी गयी है। कविता की उदास छाया कहानी पर मँडराती है, पारबती के चल बसने के बाद कहानी अपने पात्रों पर चलने के बजाए लेखक के सहारे लँगडाने लगती है।"[2] मदान के इन आरोपों को पूर्णतः स्वीकार करने में आपत्ति है। इस कहानी का कथ्य ही ऐसा है कि वह कविता की ओर अपने आप मूड़ जाती है। लेखक अपने कथ्य और अनुभूति के प्रति प्रामाणिक रहे ऐसा आग्रह करनेवाले आलोचक क्यों आरोप लगाते हैं कि "कविता की छाया कहानी पर मँडराती रही है ?"

"मांस का दरिया" का स्वर नितान्त भिन्न स्वर है। वह एक वेश्या के जीवन का जलता हुआ दस्तावेज है, जिसमें शोषण और संघर्ष को ईमानदारी से सम्प्रेषित किया गया है।

"बहुत बार उसने कराह दबाई और कँवरजीत को रोका। आँखों के सामने अँधेरा छा-छा जाता था और जोर पड़ते ही जाँघ फटने लगती थी। कँवरजीत तीन-चार बार रुका, फिर जैसे उस पर शैतान सवार हो गया था·····

- अरे रुक तो वह चीखा था और जुगनू की टाँगे दबाकर हावी हो गया था।

-अरी, अम्मा रे····मार डाला····वह पूरी आवाज में चीखी थी, जैसे किसी ने कत्ल कद दिया हो और वह छटपटा कर बेहोश सी हो गयी थी।"[3]

यह एक चित्र है "मांस की दरिया" का जिसमें कँवरजीत होटलवाला जो फोड़ा-पकी जाँघवाली वेश्या जुगनू से अपना कर्ज वसूल करता है। कमलेश्वर की मुख्य कहानियां "जोखिम", "बयान", "मानसरोवर" के हंस, या कुछ दोर

"नागमणि", "साँप", "लड़ाई", "रातें", "लाश" "में", "अपना एकान्त", "इतने अच्छे दिन हवा है", "हवा की आवाज नहीं है" आदि हैं। कमलेश्वर ने आज की कहानी में अनेक स्तरों पर घटित होनेवाले सामाजिक जागरूकता को विशेष महत्व दिया है। उनकी कहानी में आम आदमी को सम्प्रदाय धर्म और वर्ग से मुक्त आदमी की अभिव्यक्ति मिली है। उन्होंने आदमी को सैध्दान्तिक भूमिका पर परिभाषित किया है। आदमी संशयवाद का शिकार है ऐसा वे मानते हैं।

"कमली के बायें गाल की चमड़ी पर खून की एक सुखी बूंद चिपकी हुई थी। वह उस पर उँगली फिराने लगी तो बाला ने पूछा - क्या हुआ ? उस साले लाला ने काटा इतने जोर से ? - नहीं····कमली ने मामूली तौर से कहा उसका वो एक दाँत सोने का हैं न, वही गड़ जाता है····।"[4]
यह सोने का वह दाँत है जो कमली के ही गाल पर नहीं, हर कहीं गड़ा हुआ है।

हिन्दी कहानीकारों में कमलेश्वर सर्वथा अग्रणी रहे हैं। हिन्दी कहानी साहित्य के विकास में उनका योगदान रहा है। कहानी के बारे में कमलेश्वरजी के विचार अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं वे कहते हैं, "कहानी लिखना मेरा व्यवसाय नहीं, विश्वास है।[5]

1·9 उपन्यासकार कमलेश्वर

कमलेश्वर सदैव अपने युग की किसी समस्या को सोचते रहते हैं। उनके सभी लघु उपन्यासों और कहानियों में उनका चिंतन प्रमुख रहता है। उनका चिन्तन एक ऐसे बुध्दिजीवी का चिन्तन है जो जन साधारण के लिए है।

कमलेश्वरजी के अब तक कुल सात उपन्यास प्रकाशित हुए हैं, जिनकी सूची इसप्रकार है -

1· एक सड़क सत्तावन गलियाँ
2· डाक बंगला
3· तीसरा आदमी

4. समुद्र में खोया हुआ आदमी

5. लौटे हुए मुसाफिर

6. काली आँधी

7. आगामी अतीत।

उक्त सात में से चार उपन्यास पुस्तककार छपने से पहले पत्रिकाओं में भी छपे थे।

1. एक सड़क सत्तावन गलियाँ

2. समुद्र में खोया हुआ आदमी

3. काली आँधी

4. आगामी अतीत

और चार उपन्यास ऐसे हैं जिन पर फिल्मे बन चुकी हैं - बदनाम बस्ती, डाक बंगला, आँधी और मौसम जो क्रमशः एक सड़क सत्तावन गलियाँ, डाक बंगला, काली आँधी और आगामी अतीत" उपन्यासों पर आधारित हैं। पहला उपन्यास "एक सड़क सत्तावन गलियाँ" है जो बाद में प्रकाशक की भूल के कारण "बदनाम गली" से प्रकाशित हुआ।

उपन्यासकार के रूप में कमलेश्वर का प्रथम प्रयास है उनका प्रभाव इतना सफल है कि उपन्यासकार कमलेश्वर को सुप्रतिष्ठित कर देता है।कमलेश्वर के उपन्यासों की कथाभूमि जीवन के यथार्थ को अपने वास्तविक रूप चित्रीत करती है। उनकी भाषा महत्वपूर्ण है। उनकी भाषा इतनी सशक्त है कि उपन्यास आकार में छोटे होते हुए भी प्रतीत होते हैं। "शेखर एक जीवनी", "झूठा सच", "बूँद और समुद्र", "कब तक पुकारूँ", "गिरती दीवारें" आदि उपन्यास समर्थ भाषा के कारण विस्तृत लगते हैं। कमलेश्वर के उपन्यासों में उपेक्षित साक्षात मिलता है। जिनका विवरण सामान्य परिजनों में वर्जित है। कमलेश्वर ने "आगामी अतीत" उपन्यासों में कस्बे की वेश्याओं की जिन्दगी का अत्यन्त स्वाभाविकता से चित्रण किया है। उनके जीवन में आर्थिक संकट के कारण जितनी कटुता आ गयी है इसका लेखक ने सहज और यथार्थ चित्रण करके उनकी दारूण कथा को पाठक के सामने रखा है।

भाषा की दृष्टि से "एक सड़क सत्तावन गलियाँ" एक प्रथम कोटि का उपन्यास है। उनकी भाषा इतनी ही जानदार, गतिशील, चित्रोपम और यथार्थमयी है। भाषा की व्यंजना जिसका एक उदाहरण -

"तुम कह देना मैंने बुलाया है। नाच गाने में जी लगाने का दोष तो तुम्हारे सिंहजी का है। कौन सा ऐसा कदम है जो बाकी बचा है उनसे किसी दिन दड़ा पकड़ा गया तो जेल में सड़ेंगे।"[5]

कमलेश्वर के दूसरे उपन्यास "डाक बंगला" पर दृष्टिपात करता है। "डाक बंगला" यथार्थ कहानी नहीं है एक स्त्री है। जिसके माध्यम से डाक बंगले को रूपायित किया है।

कमलेश्वर के उपन्यासों में अनावश्यक विस्तार नहीं है, जैसा कि समकालीन उपन्यासकारों राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश, उपेन्द्रनाथ अश्क, नरेश मेहता, अमृतलाल नागर आदि में मिलता है। कमलेश्वर एक विशिष्ट रचनाकार के रूप में स्थापित हैं। वह मूलतः कहानीकार हैं। कथा में युग सत्य को उद्‌घाटित करने में काफी सफल रहे हैं। उनके उपन्यासों में बड़ी सूक्ष्मता ओर सांकेतिकता के साथ यथार्थ को निरूपित किया गया है। युगबोध और युग सत्य को उद्‌घाटित करने में काफी सफल रहे हैं। उनके उपन्यासों में बड़ी सूक्ष्मता और सांकेतिकता के साथ सामाजिक यथार्थ को रूपायित किया है। युगबोध और युग सत्य को कमलेश्वर ने सदैव प्राथमिकता दी है।

"समुद्र में खोया हुआ आदमी" में जीवन संघर्ष का चित्रण भी बेहतर ढंग से हुआ है। क्योंकि इसमें परिवार का प्रत्येक सदस्य अपने अपने ढंग से संघर्ष में जुट जाता है तथा जिन्दगी से लड़ता है। सही बेहतर बनाकर जीने की कोशिश करता है। "समुद्र में खोया हुआ आदमी" की एक बड़ी विशेषता यह है कि यथार्थवादी शैली में यह एक अच्छा प्रतीकात्मक उपन्यास भी है। उदाहरण के लिए जो संसार की भीड़ में श्यामलाल स्थिति को व्यंजित करता है -

"सड़कों पर एक के बाद एक लहरें आती चली जा रही हैं - आदमियों की लहरें - और वे इस जन समुद्र में डूबते जा रहें हैं। छटपटाकर इधर उधर हाथ पैर मार रहें हैं, पर कोई सहारा नहीं मिलता। कोई किनारा दूर तक नज़र नहीं आता।"[6]

"लौटे हुए मुसाफिर" का सम्बन्ध है विभाजन की स्थिति को स्पष्ट करने में "मुसाफिरों का लौटना" उतना जरूरी नहीं है लेखक का यह कहना - "गरीबी, अपमान, भूख और बेबसी में भी वे हारे नहीं थे, पर नफरत की आग से एक अनजान देश की ओर चले गये।" "काली आँधी" उपन्यास को लेखक ने एक असफल दाम्पत्य की करूण कहानी कहा है। पूँजीवादी व्यवस्था की गलत महत्वाकांक्षाओं का ही प्रतीक है, जो अपने स्वार्थ के लिए साधनहीन फुसलाने का इस्तेमाल करने से परहेज नहीं करती। विचारों के साथ साथ "काली आँधी" एक सशक्त और सार्थक उपन्यास है। उनकी कला है, जो स्थान स्थान पर उपन्यास में उजागर हुई है उदाहरण के रूप में -

"तुम लोग सिर्फ चीजों को बखूबी इस्तेमाल करना जानते हो। बाढ आयी तो उसे इस्तेमाल करो, सूखा पड़ा तो उसे इस्तेमाल करो, कही कोई लड़की भाग गयी तो उसके भागने को इस्तेमाल करो....कहीं कोई मर गया तो उसकी मौत को इस्तेमाल करो....तुम लोगों ने आदमी के आंसुओं और जज़बातों तक को नहीं छोडा....उसकी आशाओं और सपनों तक को नहीं बख्शा....तुमने उसके सपनों को नारे बना कर निचोड़ लिया। अब क्या बचा है आदमी के पास ?"[7]

कमलेश्वर के प्रायः सभी उपन्यासों की वस्तु निम्न मध्यवर्गीय समाज के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक जीवन से सम्बध्द है। कमलेश्वर का अगला उपन्यास "तीसरा आदमी" बिल्कुल सीधी सादी शैली में लिखा हुआ उपन्यास है। उपन्यास की दूसरी बड़ी विशेषता यह है कि पति-पत्नी के बीच किसी "तिसरी आदमी" की आने की प्रचलित कहानी को लेखक ने एक ऐसा सामाजिक और आर्थिक आयाम प्रदान किया है। वह मध्यवर्गीय दाम्पत्य की ऊँच-नीच की प्रामाणिक दस्तावेज बन जाती है।

मध्यवर्गीय परिवारों के संस्कारों, कुंठाओं, आर्थिक असमर्थताओं का बड़ा ही सशक्त चित्रण कमलेश्वर के इस उपन्यास में है। कमलेश्वर ने "आगामी अतीत" उपन्यास में कस्बे की वेश्याओं की जिन्दगी का अत्यंत सूक्ष्मता से अंकन किया है। उनके जीवन में आर्थिक संकट के कारण जितनी कटुता है वैसे ही लेखक ने सहज और यथार्थ का चित्रण करके उनकी दारूण कथा को दयनीयता के साथ पाठक के सामने रखा है। जो उनकी भाषा से स्पष्ट है -

"चले आते हैं मुरदुए। इश्क लड़ायेंगे....अबे, यहाँ धन्धा होता है, धन्धा। इश्क नहीं....अगली बार आना बच्चू तो जेब गरम और कमर पुल्ता करके आना....", "अच्छा, अब तू जाता है कि नहीं। पिंड तो छोड। जैसे तैसे पेट पालते हैं हम लोग। क्यों पेट पर लात मारने चला जाता है ?"[8]

स्पष्ट है कि यहाँ केवल "प्रेम लौकिक" या भौतिक नहीं वह एक आर्थिक पक्ष भी है।

कमलेश्वर एक जागरूक कथाकार हैं। समकालीन राजनीतिक कुचक्र को आधार बनाने का सफल कार्य उन्होंने कियाहै। आम आदमी के जीवन की सार्थकता को व्यंजित करने में वे काफी सफल रहे हैं। सभी उपन्यासों में निम्न-मध्यवर्ग का बिखराव और टूटन, आर्थिक विषमताओं का चित्रण है। व्यापक मानवीय संवेदना, वातावरण और चरित्रों के आत्मीय परिचय की निकटता व्यक्तिगत अनुभूति कमलेश्वर के उपन्यासों में विद्यमान है। उनके सभी उपन्यास में मानवीय संवेदना के नितान्त स्तर प्रकट होते है।

1.1.2 **कमलेश्वर और दूरदर्शन**

कमलेश्वर के कार्यक्रम में भारतीय दूरदर्शन की उपलब्धि है। उनकी परिक्रमा अद्वितीय है। दूरदर्शन पर कमलेश्वर जिस तरह मामूली लोगों का इन्टरव्यूह लेते हैं उनकी मजबूरियों को वे रेखांकित कर देते हैं। उन्होंने इन्टरव्यूह के तरीके को "कला" बना देने का सफल कार्य किया है। कमलेश्वर के व्यक्तित्व के कई पहलू हैं, सबसे पहले एक कहानीकार हैं, उन्होंने सैंकड़ो कहानियाँ लिखी हैं, सच्चाई की आईना से प्रगतिशील बनाने में काफी सफल रहे हैं। साथ में वह उपन्यासकार

2 Repeat

d/m

भी हैं।

"सारिका" के वे संपादक हैं। पहले वह "नयी कहानियाँ" पत्रिका का संपादन था। दूरदर्शन स्टार हमारे कमलेश्वर साहब हैं जो अपने प्रोग्राम "परिक्रमा" जैसे दूसरे लोगों से परिचित कराते हैं, समाज के हिस्सों पर हाथ दिखाते हैं। "परिक्रमा" प्रोग्राम से ही उन्होंने पढ़े लिखें लोगों को दिखाया। उनकी सामाजिक समस्याओं पर उन्हें बोलने का मौका दिया उनके वाद विवाद किया। सवाल ऐसे तीखे किये कि रयाकारी और कपट का पर्दा हट गया।

दूरदर्शन स्टार कमलेश्वर की एक और विशेषता है। वह एक खूबसूरत नौजवान आदमी हैं, जो मामूली बुश शर्ट और पैंट में दिखाई देता है। दूरदर्शन की सामाजिक सोशालिस्ट परिकल्पना है जो कमलेश्वर के "परिक्रमा" प्रोग्रामों से उजागर हुई। सामाजिक और सोशिलस्ट विचार वाले कमलेश्वर हैं, जिसका आर्ट टेलिविजन के माध्यम से बारह लाख टी·वी·दर्शकों तक हर हफ्ते पहुँचता है।

कमलेश्वर साहित्य में एक बेहद चर्चित व्यक्ति है। हिन्दी साहित्य से कमलेश्वर का वास्ता है। "सारिका" का उनका दफ्तर टाइम्स ऑफ इंडिया के संपादक का कमरा कम यूनियन का दफ्तर है।

बम्बई दूरदर्शन पर कमलेश्वर एक साप्ताहिक हिन्दी कार्यक्रम चलाते है - "परिक्रमा" । बंबई के अलग - अलग वर्गों के लोग परिक्रमा के व्दारा अपने अपने अनुभवों से साक्षात्कार करते हैं। हर आदमी भिन्न ता में परिक्रमा के जरिए एकता की बात करता हैं। कमलेश्वर को सारी व्यस्तता के बीच साहित्यकार समझते हैं। व्यक्तिगत रिश्तों में कमलेश्वर बेहद भावुक है। कमलेश्वर ने आन्दोलन शुरू किये। "एक बुर्जुग का कहना हैं स्वयं भी डिसएग्री नहीं करता जब से कमलेश्वर ने अपने दायरे में फिल्मों को समेटा हैं।

कमलेश्वर ने अपने साप्ताहिक कार्यक्रम में मजदूर, कामगार, लेखक, गायक, कुली, नाई, टॅक्सीवाले, मोची, होटल के बेयरे, क्लीनर, होटलों में काम करनेवाले

बच्चे, अंधे, अपंग, शराबी, जुआरी लोगों की पेश की हैं। कमलेश्वर की जिन्दगी और व्यक्तित्व विरोधाभासों से भरा हैं। वे जनसाधारण में दिलचस्पी हैं। उन्होंने अपने विशेष कार्यक्रम को इस स्थिती के अनुकूल बनाते हुए भी सामाजिक दायित्व को भुलाया नहीं।

कमलेश्वर ने दूरदर्शन के सशक्त माध्यम से अमीर और गरीब दुनिया का परिचय करवाया हैं। उसने कला की दुनिया, संगीत - जगत, काव्य प्रतिभा, धर्म और राजनीती सभी को देखा परखा हैं। हर प्रकार के पाखंड से हसते हुए पर्दा उठा देना कमलेश्वर की आदत हैं। उसने ज्योतिष और पाखंड का एक पुरलुफ्फ खंडन किया है। कमलेश्वर की सहजता उसका दूसरा गुण है। कमलेश्वर ने कार्यक्रम को एक निजी उपलब्धी ही नहीं बनायी बल्कि दूरदर्शन माध्यम को शक्ति का परिचायक बना [redacted] दिया।

1·11 संपादक कमलेश्वर

कमलेश्वर कथाकार के रूप में प्रख्यात हुए। समय समय पर उन्होंने संपादन कार्य भी किया है। सम्पांदक व्यक्तित्व का पूर्ण विकास "सारिका" के माध्यम से ही हुआ है। सर्वप्रथम हिन्दी "संकेत" में ही चिन्तन और पत्रकारिता की परिकल्पना व्याप्त है। समय समय पर चिन्तन की प्रक्रिया और विधि बदलती रहती है। लेखक सम्पादक का दायित्व कुछ अधिक हो जाता है। अपनी सृजनात्मक क्षमता के बल पर लेखक संपादक साहित्यिक, युगबोध से सम्पृक्त करने में सक्रिय सहयोग देता है।

हिन्दी साहित्य में "भारतेन्दु युग" इस संदर्भ की पुष्टि करता है। संपादकों ने पहली बार क्रान्तिकारी कदम उठाया था। समान्तर साहित्यिक युग की भी संरचना की थी। "सरस्वती", "नया साहित्य", "हंस", "नई कहानियां", "प्रतीक", "निकष", "संकेत" जैसी अनेक पत्रिकाएँ लेखकों द्वारा संपादित की

गयी। आज के जागरूक लेखक संपादक का संघर्ष भारतेन्दु युगीन लेखकों से जटिल एवं बड़ा है।

आज जैसी पूँजीवादी व्यवस्था की पेचदगी नहीं थी। प्रतियोगिता नहीं थी। हिन्दी में वैचारिक स्तर पर रचनाधर्मिता का पक्ष उजागर करनेवाली अनेक पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही है। महानगर, नगर और कस्बों से प्रकाशित हो रही है। छोटे बड़े ऐसे ही संघर्षरत चेतना संपादकों की कतार में एक कड़ी आलोचना की है। सम्पादक पत्रकारिता के दायित्व में युगबोध से आम आदमी को अमूर्त करता है । आज के साहित्य का सामान्यजन आम आदमी वह है जो कहीं भी, किसी भी क्षेत्र में नियंता नहीं है हर कार्य क्षेत्र की आधार शिला है। आज की सारी उत्पादन व्यवस्था और जीवन प्रणाली में सत्ता आक्रांति राजनीति और पूँजीवाद द्वारा झूठे आश्वासनों के तहत, उत्पीड़न यह सामने खड़ी है। कमलेश्वर लेखक के रूप मे नयी कहानी से सम्बध्द रहे हैं।

नयी कहानी का आन्दोलन प्रगतिशील साहित्य का अभिन्न रूप है। व्यक्तिवाद, कुंठा, संत्रास, अकेलापन जैसे प्रतिगामी भावों के प्रति खुली उपेक्षा है। कमलेश्वर में चिन्तन का पक्ष प्रमुख है। वे देश के अनुरूप "आम आदमी" के बहाने सर्वहारा विस्तृत रूप में देखे जाते हैं। संपादक व्यक्तित्व का पूर्ण विकास "सारिका" के माध्यम से ही हुआ है। दिल्ली के निकलनेवाले साप्ताहिक पत्र "इंगित" का सम्पादन भी कमलेश्वरजी ने किया है। इस पत्र में तत्कालीन आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक टिप्पणीयाँ और निबंधों का सामयिक महत्व था। सामयिक समस्याओं में गहरी अध्ययन का अवसर प्राप्त हुआ। सामयिक राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय गतिविधियों के साथ उसका चिन्तन प्रखर हुआ।

सम्प्रदायवाद, अंध राष्ट्रीयतावाद और हिंदू वाद की बखिया कमलेश्वर ही "हरिश्चंद्र" के उपनाम से उधेड़ते रहे हैं। उस समय भगवतशरण उपाध्याय, राही मासूम रजा, अमृतराय नागार्जुन, गणेश शुक्ल जैसे प्रगतिशील लेखक विचारक रहे थे। कमलेश्वरजी की "नई कहानियां" साहित्यिक पत्रिका है जिनके माध्यम से

साहित्यिक समस्या का उजागर अवसर प्राप्त हुआ है। उन्होंने नये कथाकारों को स्थापित किया है। "मेरा हमदम मेरा दोस्त' है से कालम से स्थापित लेखकों में जीवन के अंतरंग को पाठक के सामने रखने का प्रयास किया है। कला कोई भी हो लेखन की या संपादन की इसके सत्य को क्रियाशीलता के द्वारा ही प्राप्त किया जाता है। पत्रिका को जीवन्त और रोचक बनाने की जिम्मेदारी भी संपादक पर होती है। भारतीय साहित्य के स्वरूप को एकात्म करने का दायित्व कमलेश्वर ने निभाया है। उन्होंने यथार्थवादी और प्रगतिशील चिन्तन की परम्परा की है।

सन 1954 ई. में "कहानी" मासिक पत्रिका के प्रकाशन पर श्रीपतराय जैसे प्रतिष्ठित संपादक की सहयोगिता से "सारिका" के संपादन तक कमलेश्वर ने एक नयी यात्रा तय की है। 1963 से 1965 तक उन्होंने "नई कहानियाँ" का संपादन किया। मार्च 1967 में कमलेश्वर ने "सारिका" का संपादकत्व ग्रहण किया और अप्रैल 1978 ई. तक इसका संपादन करते रहे। कमलेश्वर हिन्दी कहानी के विवादास्पद और चर्चित व्यक्तित्व रहे है। कहानीकार, आलोचक और संपादक रूप में उन्होंने हिन्दी कहानी को समृध्द करने में योगदान दिया है।

कमलेश्वर "समांतर" नामक कहानी आन्दोलन को प्रस्थापित करने में संलग्न रहे है। आम आदमी के आस पास आज की कहानियाँ समांतर का सूत्रवाक्य हो गया। ये कहानी सामान्यजन की अपराजेय परम्परा की कहानी है। इसमें व्यक्ति, आम आदमी अपने परिवेश की भ्रष्टता के प्रति संघर्षरत मानव बताया गया है। गोविन्द मिश्र जैसे कहानीकारों ने भी समान्तर के आम आदमी के विषय में ऐसे ही विचार प्रकट किए हैं।

"प्रेमचंद के युग में भी आम आदमी को सामने रखा जाता था..... प्रगतिशीलों ने भी इसे लेकर नारा बुलंद किया था....नई कहानी में भी आम आदमी को याद किया गया लेकिन यह आम आदमी हमेशा लेखक की ढाल ही बनता रहा है, इसके अलावा मैं यह भी कहना चाहूँगा कि आम आदमी की तस्वीर ही अलग से कहां बाकी रह गई है। उसका बजूद तो परिवेश के साथ डायल्यूट हो गया है - इन स्थितियों में समांतर सहज एक नारा लगता है।"[9]

भारत चीन युध्द में देश की पराजय से विक्षुब्ध मानस देश में नक्सलवाद की उग्र राजनीति प्रत्येक राजनीतिक दल काँग्रेस तक में झुकाव, समाजवाद का नारा व्यवस्था का भ्रष्ट स्वरूप, किसी भी अन्याय का प्रतिकार लेने को प्रतिबध्द और सन्नद चित्रीत हुआ। नई कहानी के संदर्भ में कमलेश्वर कहते हैं -

"स्वतंत्रता के बाद पहली बार नई कहानी ने आदमी को आदमी के संदर्भ में प्रस्तुत किया है, शाश्वत मूल्यों की दुहाई देकर नहीं बल्कि उसी आदमी को उसके परिवेश में सही आदमी या मात्र आदमी के रूप में अभिव्यक्ति देकर नई कहानी मनुष्य को उसके परिवेश में अन्वेषित करती है और मानव नियति और उसके संकट के द्वंद की अभिव्यक्ति है।"[10]

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि समांतर में "नया" कुछ भी नहीं है। आज कहानी के संबंध्द अधिकांश लेखक यही स्वीकार करते हैं। नई कहानी को कमलेश्वर ने आदमी की जिन्दगी का एक ऐसा अंश माना है जो उस जीवन की विराटता या समग्रता का बोध दे सके। नई कहानी का मूल स्त्रोत है - जीवन का यथार्थ बोध हर आदमी के जीवन में प्रयत्नशील हुआ है। जीवन में टूटते, हारते और अकुलाते मनुष्य गरिमा का विश्वास है। कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव और मोहन राकेश तीनों ने ही नई कहानी के विभिन्न पक्षों पर कलम चलाई। यह कहानी शुरू से ही प्रगतिचेता लेखकों और मनुष्य की वाणी रही है। यह कहानी मानव केन्द्रित है।

सारिका के समांतर कहानी विशेषांक में कमलेश्वर इन कहानियों के कथ्य को इसप्रकार रेखांकित किया है।

"ये कहानियाँ साहित्य की तरफ से साथ देने का औपचारिक प्रस्ताव नहीं, बल्कि बड़े पैमाने पर चल रही यथार्थ की लड़ाई में शामिल कहानियाँ है। लड़ाई के दौरान लिए जानेवाले निर्णयों को यदि कोई कहानी कहना चाहे तो कह ले, लेकिन ये कहानी नहीं है। नाम की सुविधा के लिए हम इन्हें कहानी कह लेते हैं। ये मुजस्सिम आदमी की बदलती हुई धारणाओं, उसके प्रश्नों पर चिंताओं की लिखित तहरीर ही नहीं, बल्कि समय में लिए गए उसके फैसलों की यथार्थ

प्रतिलिपियाँ भी है।"[11]

नयी कहानी के सामने वे सब खतरे मोजूद थे। स्वतंत्रता के तत्काल बाद सपनों के टूटने का विषाद भरा विक्षोभ भी था। कहने का मतलब यह है कि सब स्तरों पर मनुष्य अस्तित्व और आस्था के भयंकर संकट में फँसा जाता है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के शब्दों में -

"इसका मतलब यह है कि कुछ अच्छी कविताएँ तो मिल जाती है पर कवियों का कोई विशिष्ट व्यक्तित्व नहीं बन पा रहा है। कविता के संकलनों को देखते जाओ, लगेगा कि बहुत सी कविताएँ एक जैसी हैं। इन्हें देखकर मुझे लगा कि आज का कवित अपने अनुभवों के आधार पर कुछ विशिष्ट, कुछ अलग नहीं दे पा रहा है।"[12]

1·12 कमलेश्वर और उनकी फिल्में

आजकल दुनिया में फिल्म अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। फिल्में बहुत तेजी के साथ विकास की चरमता से आगे बढ़ रही है। हिन्दी फिल्मों से आज सबसे प्रबल नाम है - कमलेश्वरजी। पहले तो वे एक श्रेष्ठ साहित्यकार हैं और बाद में फिल्मकार। कमलेश्वरजी की कुछ कहानी पर सफल फिल्में भी बनी हैं। फिल्मी दुनिया को उन्होंने एक नया मोड़ दिया है। "आज हिन्दी फिल्मों में कमलेश्वर एक अपरिहार्य नाम होने के साथ एक निश्चित शक्ति है।"

कमलेश्वर एक ऐसे व्यक्ति-लेखक हैं जो फिल्मों को नयी दिशा देने में सफल प्रयास करते रहे। उनका अपनी भाषा पर जबरदस्त अधिकार है। उन्होंने फिल्मों के लिए कथायें, पटकथायें और संवाद भी लिखे हैं। भगवतीचरण वर्मा, अमृतलाल नागर, प्रेमचन्द आदि साहित्यकारों की रचनाओं पर सफल फिल्में बन चुकी हैं। परंतु फिल्मी दुनिया के अंतराल में वे टिक नहीं पाये। कमलेश्वरजी फिल्म निर्माण की समस्याओं से अच्छी तरह वाकिफ हैं। वे सही फिल्मों की तलाश में जुट गये हैं। वे हिन्दी फिल्मों की ताकत हैं। उनकी फिल्मी कहानियों, पटकथाओं में मौलिकता रहती है। उनकी फिल्में निम्नांकित हैं -

मौसम, बदनाम बस्ती, आँधी, आनंदाश्रम, वही बात, फिर भी, पति पत्नी और वह आदि। जिनमें से हिन्दी की कहानी, पटकथा या संवाद उन्होंने लिखे हैं।

कमलेश्वर फिल्मी स्क्रिप्ट लिखनेवालों में बेजोड़ है। उनकी एक विशेषता है कि अन्याय फिल्मी लेखकों की वे हमेशा सराहना करते हैं। वे लेखनी को तलवार की धार मानते हैं। पूरा फिल्म जगत् "कमलेश्वर" के नाम से चौंक-सा उठता है। उनकी "अमानुष" पहली फिल्म है। कमलेश्वर ने खुद माना है कि "फिल्म एक व्यावसायिक कला है।" ऐसा मानकर वे काफी सफल रहे हैं।

कमलेश्वर के पास आज कल बहुत सारी फिल्में हैं। वे किसी कथाकार, किसी के पटकथा लेखक या किसी के संवाद लिखने में व्यस्त हैं। बी·आर·चोपडा, शक्ति सामंत, रामानन्द सागर आदि निर्देशकों की फिल्में उनके पास हैं। उन्होंने सही फिल्मों की तलाश में हिन्दी फिल्मों को एक मर्यादा दी है। उनके पास सहज और सरल अभिव्यक्ति थी। उन्होंने जमींदार का खाका खींचा है उनका हद तक मुर्दा कर दिया है।

कमलेश्वर की बड़ी ताकत उनकी - ओरिजनेलिटी है। उससे भी ताकत है उनकी ताजगी। उनके मुँह से हिन्दी अदीबों शायरें के नाम बड़े पुरजोश में सुने हैं। फिल्म इंडस्ट्री में सबसे उपर कमलेश्वर का नाम है। वे अविरत रूप से लिखते ही रहे। फिल्म की मजबूरियों को जानते हुए भी वे काफी लिखते ही रहते हैं। उनके हाथ में फिल्म सौंपकर लोग बेफिक्र रहते हैं। कमलेश्वर हमारे लिए हिन्दी का दूसरा नाम है - जो हिन्दी जनता की है।

1·13 निष्कर्ष

कमलेश्वर सदैव अपने युग की समस्या के मानवीय पक्ष को रचना का आधार बनाते हैं। यह उनकी रचना दृष्टिकोण या चिन्तन का निर्माण करता है। उनके सभी उपन्यासों और कहानियों में उसका स्थान प्रमुख रहता है। किन्तु उनका

चिन्तन दार्शनिकता के बोझ से बोझील नहीं होता, जैसा कि कई उपन्यासों में पाया जाता है। उनका चिन्तन एक ऐसे बुध्दिजीवी का चिन्तन है जो जन सामान्य की चिन्ता से उत्पन्न जनवादी चिन्तन है। उसकी कृतियों में कुंठाग्रस्त, परिस्थितियों, मनोवैज्ञानिक विश्लेषणों तथा यौन की विकृतियों का अतिरिक्त आग्रह है। उनकी कृतियाँ एक प्रकार से पाठकों को अपने साथ "इन्वॉल्व" करनेवाली कृतियाँ है। क्योंकि जिस मार्मिक मानवीय पक्ष का वे चित्रण करते हैं, वह सामाजिक जीवन का अनुभव करते हैं।

कमलेश्वर श्रेष्ठ आलोचक, कहानीकार, उपन्यासकार, साहित्यकार, फिल्मकार के रूप में हमारे सामने आते हैं। उनका स्वर सबसे अलग है। उन्होंने समाज के सत्य को बड़ी बेबाकी के साथ उद्‌घाटित करने का प्रयास किया है। उनका व्यक्तित्व गतिशील व्यक्तित्व है। उनकी कथनी और करनी में एकात्मकता का विहंगम दर्शन मोजूद है।

कमलेश्वर साहित्य में बेहद चर्चित व्यक्ति के रूप में सामने आते हैं। उनका चिन्तन यथार्थ के वास्तविक चित्रीत करता है। जनसाधारण में उन्हें दिलचस्पी है। उनकी आदत यह है कि पाखंड को हँसते हुए पर्दा उठा देना। वह एक अफसानानिगार हैं। वे बेहद मेहनती आदमी हैं।

कमलेश्वरजी एक अच्छे लेखक, वक्ता, संपादक और आदमी भी हैं। वे बेहद जिद्दी आदमी हैं।

सं द र्भ

1· कमलेश्वर - मधुकर सिंह, पृष्ठ 127

2· कहानीकार कमलेश्वर संदर्भ और प्रकृति - सूर्यनारायण मा·रणसुभे, पृ·39

3· कमलेश्वर - सं·मधुकर सिंह, पृष्ठ 160

4· कमलेश्वर - सं·मधुकर सिंह, पृष्ठ 164

5· कमलेश्वर - सं·मधुकर सिंह, पृष्ठ 186

6· कमलेश्वर - सं·मधुकर सिंह, पृष्ठ 191

7· कमलेश्वर - सं·मधुकर सिंह, पृष्ठ 194-95

8· कमलेश्वर - सं·मधुकर सिंह, पृष्ठ 203

9· कहानी का संदर्भ - सं·पुष्पपाल सिंह, पृष्ठ 17

10· कहानी का संदर्भ - सं·पुष्पलाल सिंह, पृष्ठ 18

11· कहानी का संदर्भ - सं·पुष्पलाल सिंह, पृ·16

12· नयी कहानी की भूमिका - सं·कमलेश्वर, पृष्ठ 186